मादक पदार्थ सेवन एवं नशामुक्ति : स्वस्थ्य मानव समाज के संदर्भ में

* डॉ. स्मृति अग्रवाल, ** कु. अमीता अग्रवाल

30 हजार वर्ष पूर्व, आदिकाल से नशीले पदार्थो का सेवन किया जा रहा है, किन्तु लिण्डस्मिथ न्यूयार्क समाजशास्त्री का मत है कि, यदि (ड्रग्स) दवा के रूप में इनका सेवन किया जाना चाहिये, आदत के रूप में इनका सेवन करने से शारिरिक मानसिक, सामाजिक, भाषा व्यक्तित्व विकास पर इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, चाहे वो कैसे भी मादक पदार्थ हो जैसे–शराब, तम्बाकु, सिगरेट, अफिम, गांजा, कोकिन, चरस, भांग, मारफिन, ब्राउन शुगर, स्मेंक, मारिजुआन आदि। लिण्डस्मिथ ने मादक द्रव्य पदार्थो के संदर्भ में कहा–**संवेदन मदक औषधि** (Narcotic Drug) के रूप में इसका सेवन किया जा सकता है, किन्तु शारिरिक क्रियाशीलता को बढ़ाने या करने के लिये इसका सेवन मादक पदार्थो का आदि होना है। इन्होने मादक पदार्थो के सेवन के कुछ प्रमुख कारण स्पष्ट किये –

• सुखद अनुभव के कारण व्यक्ति मादक पदार्थो का सेवन करता है। • जिन्दगी में असफल, अविश्वास, कुन्ठा, तनाव, नि क्रियता की स्थिति में व्यक्ति मादक पदार्थो का सेवन करता है। • पारिवारिक सदस्यों को डराने धमकाने अपने निकम्मेंपन को छिपाने के लिये व्यक्ति मादक पदार्थो का सेवन करता है। • भय, असुरक्षा, आर्थिक तंगी कलह से परेशान होकर भी व्यक्ति मादक पदार्थो के सेवन के आदि हो जाते है। • माता पिता, मित्र समूह या अन्य पारिवारिक सदस्यों से सीख कर, देखकर भी मादक पदार्थो के सेवन की ओर आकर्षण बढ़ता है। • पाश्चात्य संस्कृति, शिष्टाचार, आधुनिकता, उच्च स्तरीय जीवन शैली बनाने के लिये भी उच्च समाज में मादक पदार्थो का सेवन किया जाता है। • मानसिक–शारीरिक विकार, अशान्त, अस्थिर वास्तविकता से भागने वाले व्यक्ति भी संघर्ष से बचने के लिये मादक पदार्थों का सेवन करते है।

तालिका क्रमांक 1
मादक पदार्थो के सेवन के मुख्य कारण

क्र0 सं0	मदक पदार्थो के सेवन के मुख्य कारण	प्राप्त आंकडे प्रतिशत में
1.	मनोवैज्ञानिक कारण	78.9%
2.	यौन वृद्धि एवं दबाव	74.95%
3.	असफल व्यक्तित्व	68.9%
4.	मानसिक विकार	65.7%
5.	शारीरिक विकार	48.7%
6.	हिन्दी संस्कृति	39.95%

उपर्युक्त सभी तथ्य लिण्डस्मिथ तथा उनके सहयोगियों ने अपने शोध कार्य के माध्यम से दिये जिनके अनुसार 85.75 प्रतिशत मादक पदार्थो के सेवन का कारण इनमें से था। जिन्हे उन्होने प्रमुख बिन्दूओं के प्रतिशत के माध्यम से स्पष्ट किया जिन्हें तालिका में बताया गया है लिण्डस्मिथ ने अपने अध्यन के लिये रेण्डम सेम्पलिंग के माध्यम से 100 सेम्पल लिये है।

तालिका क्रमांक 1 से स्पष्ट है कि मादक पदार्थो के सेवन के लिये मनावैज्ञानिक कारण ज्यादा प्रभावशाली होते है जिनका सीधा संबंध व्यक्ति की सोच से होता है, जिसके कारण Warmth Authorization कम होने से मादक पदार्थो के लिये वह Demanding nesa हो जाता है, और उसके व्यक्तित्व का विकास नकारात्मक दृष्टिकोण ले लेता है। बढ़ते मादक पदार्थो के दुष्परिणामों को, मुम्बई के शोद्यार्थी ने केन्द्रीय शिक्षा ओर समाज मन्त्रालय को दी एक रिपोर्ट में बताया की मुम्बई में प्रतिदिन 5 व्यक्तियों की मौत मादक पदार्थों के सेवन से होती है। युवा वर्ग द्वारा स्कूल, कॉलेजों में मादक पदार्थो का सेवन किया जाता है, तथा यहां लगभग 15 वर्ष कि आयु के बाद तम्बाकु, सिगरेट, विभिन्न पाउच का सेवन किया जाने लगता है। जिनमें से 75 प्रतिशत छात्र तम्बाकु, शराब का सेवन करते है, तथा अन्य 15 प्रतिशत तम्बाकु, शराब के साथ अन्य मादक पदार्थों का भी सेवन करते है, सर्वे के माध्यम से स्पष्ट हुआ कि स्कूल व कॉलेज स्तर पर 81 प्रतिशत छात्र अपने साथी समूह से मादक पदार्थो का सेवन सीखते है, जिनमें से 44 प्रतिशत छात्र साथी समूह के समान ही सेवन करते है, तथा 31 प्रतिशत केवल साथी के साथ ही सेवन करते है, उसके अलावा 15–24 वर्ष के आयु के युवा वर्ग पर मादक पदार्थों के सेवन को लेकर जो शोध कार्य किया उसके परिणाम स्वरूप भी 63 प्रतिशत युवा वर्ग का कहना था कि, अतः उपर्युक्त शोध से स्पष्ट है कि युवा पीढ़ी का मादक पदार्थ के सेवन की और` ले जाने के लिए व्यसनी साथी समुह भी एक प्रमुख कारण है।

मादक पदार्थों के सेवन से पारिवारिक, सामाजिक दृष्टिकोण पर शोध के उपरांत जो प्रमुख समस्याएं उत्पन्न होती है, उन्हें तालिका क्रमांक 3 में स्पष्ट किया गया है – उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि, यदि हम समाज व परिवार में बढ़ती समस्याओं पर ध्यान दे तो, सभी समस्याओं का सामान्य अनुपात 68 प्रतिशत तक पाया गया जो कि सामाजिक पारिवारिक समायोजन को प्रभावित करती है।

शोध के दौरान प्राप्त जानकारी से स्पष्ट किया गया है कि **"केन्द्रीय शिक्षा एवं समाज कल्याण विभाग"** की सहायता से समय–समय पर मादक पदार्थों के सेवन के नकारात्मक प्रभावों को पोस्टर, चार्ट, सेमिनार, प्रदर्शनियों, नारों आदि के माध्यम से समाज में जागरूकता लाए, इसके सहायोग के लिये भारत सरकार ने **अरमाड़ा संघ** की भी स्थापना की है जो कि मादक पदार्थो के सेवन के विरूद्व संसाधन प्रबंधो पर नियंत्रण रखने में सहायक है। हमारे देश में कानून मादक पदार्थो के सेवन व व्यापारीकरण को लेकर अधिनियम पारित किये गये है। जिनमें आवश्यकतानुसार समय–समय पर परिवर्तन किये

*–** राजकीय गर्ल्स कॉलेज, नीमच (म.प्र.)

जाता है। मादक पदार्थो के सेवन व व्यापारिक नियंत्रण की दृष्टि से भारत सरकार ने 1893 में सर्वप्रथम **''रायल कमीशन''** की स्थापना की थी तथा इसके सहयोग के लिये 1895 में आयोग का गठन किया गया। तथा 1985 में **''नारकोटिक्स ड्रग्स एण्ड साइकोट्रापिक सबस्टेसेज एक्ट''** पारित किया गया, जिसमें 1989 में संशोधन हुआ था। इसके अन्तर्गत प्रथम बार मुजरिम पाये जाने पर 10 वर्ष कारावास, 1 लाख रूपये जुर्माना तथा संपत्ति जप्त का आदेश है, तथा द्वितीय बार मादक पदार्थो के सेवन व व्यापार संबंधित अपराधी पाये जाने पर यह दण्ड दोहरे भार के रूप में दिया जायेगा। मादक पदार्थो के सेवन व व्यापारीकरण को नियंत्रण करने तथा लिप्त अपराधी तक पहूंचने के लिये सन् 2001 में **''नारकोटिक्स इण्टेलिजेंस ब्यूरो ''** तथा ''**सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय ''** की स्थापना की गई, जो समय–समय पर कैम्प लगा कर, मादक पदार्थो के सेवन से मुक्ति के लिये उत्साहित करते है, ऐसे कार्यक्रमों से लगभग प्रतिवर्ष 300,000 लोग लाभान्वित हो रहे है, जो पुरी तरह मादक पदार्थो का सेवन छोड़ नहीं पा रहे है,तो कम लेने में अवश्य सफल हुए है। आज सरकारी व गैर सरकारी कई संस्थाएं इस दिशा में कार्यरत है। केवल मध्यप्रदेश–राजस्थान में ही लगभग 373 गैर सरकारी केन्द्र तथा 459 परामर्श नशा मुक्ति केन्द्र कार्य कर रहे है। जिनका लक्ष्य समाज की युवा पीढ़ी को तथा सभी वर्गों को मादक पदार्थों के सेवन के दुष्परिणामों से अवगत कराना तथा भारतीय संस्कृति, समाज, परिवार के जीवन मूल्यों के विघटन से बचाकर उच्च विचारधारा युक्त व्यवस्थित विकसीत समाज, परिवार का निर्माण करना है। ऐसे केन्द्रों को भारत सरकार द्वारा वित्त रूप से पोषित भी किया जाता है, जिससे इस दिशा में कार्य का उत्साह बना रहे।

तालिका क्रमांक 2

मादक पदार्थो के सेवन के आंकड़े

क्र0 सं0	वर्ग विशेष	व्यसन पर आय का कुल व्यय	व्यसन से परिवारिक समस्याएं प्रतिशत में	
1.	शहर में	50%	परिवारिक कलह	78.69%
2.	गांव में	74%	बेरोजगारी	63.6%
3.	श्रमिक वर्ग	60-[illegible]%	गरीबी	87.77%

तालिका क्रमांक 3

EVILEFECTS OF DRUG ABUSES

(मादक पदार्थो के दुरूपयोग के कुप्रभाव)

क्र0 सं0	EVILEFECTS OF DRUG ABUSES	प्राप्त आंकड़े प्रतिशत में
1.	शारिरिक प्रभाव (Physical Effects)	79.6%
2.	मानसिक प्रभाव (Mental Effects)	84.2%
3.	दुर्व्यवहार (Misconduct)	95%
4.	दुर्घटना (Accidents)	82.6%
5.	कार्यक्षमता मे कमी (Efficiency)	76.60%
6.	व्यक्तिगत विघटन (Personal Disorganization)	68%
7.	गरीबी / बेकारी (Poverty/ Unemployment)	72%
8.	पारिवारिक विघटन (Family Disorganization)	74.6%
9	सामजिक समस्या (Social Problems)	66.76%

पोषण विशेषज्ञ तथा फिजियोथेरेपिस्ट, धर्मशास्त्रीयों ने भारत सरकार के नशामुक्ति संबंधित प्रयासो के साथ कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य जैसे व्यवहारिक शिक्षा, रहन–सहन का स्तर, रोजगार उन्मुख कार्यक्रम सामाजिक पारिवारिक वातावरण संबंधित शिक्षा, स्वास्थ, पोषण, योग, शरीर क्रिया विज्ञान आदि की शिक्षा भी दी जाये तो नशा मुक्ति कार्यक्रमों को ओर अधिक सफल बनाया जा सकता है। शिक्षा के विभिन्न आयाम नशा मुक्ति में कितने सहयोगी है, इस पर स्वास्थ मंत्रालय कर्नाटक, बेंगलोर ने अपनी शोध पत्रिकाओं में संबंधित आंकड़े स्पष्ट किये है। जो कि मादक पदार्थो के नशा मुक्ति कार्यक्रम की सफलता को स्पष्ट करते है इन्हें तालिका क्रमांक 4 में स्पष्ट किया गया है।

तालिका के आंकडो से स्पष्ट है कि शिक्षा के विभिन्न क्षैत्रो को सम्मिलित कर सरकार एवं सामाजिक संस्थाएं नशामुक्ति केन्द्र एवं कैम्प लगाए तथा केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय शैक्षणिक पाठ्यक्रम में उपयुक्त तथ्यों को समिलित करे, व्यसनी व्यक्ति को इनके प्रति जागरूक बनाएं तो मादक पदार्थो के उपयोग को रोकने तथा नशा मुक्ति के लिये किये जाने वाले प्रयासो में अधिक सफलता प्राप्त की जा सकती है।

सारांश – उपयुक्त शोध पत्र की समीक्षा में स्पष्ट है, कि मादक पदार्थो के सेवन के प्रमुख कारणो व दुष्प्रभावो को जानकर, समझकर संस्कृति, समाज में फेल रहे इस दानव को नष्ट करना चाहिये, क्योंकि यदि समय रहते इसे नष्ट नहीं किया गया तो मानवता, परिवार, आत्मीयता, रिश्तों, भावनाओं को मादक पदार्थो का दानव निगल जायेगा। इससे बचने के लिये जागरूकता के साथ–साथ मनोवैज्ञानिक तथा व्यवहारिक रूप से प्रत्येक व्यक्ति को इसके सेवन के प्रति ढाल लेकर खड़ा होना पड़ेगा तभी हम हमारी संस्कृति, सभ्यता, समाजिक, पारिवारिक, सभ्यता को इसके वार से बचा कर सुरक्षित कर पायेंगे।

तालिका क्रमांक 4

नशा मुक्ति में सहायक शैक्षणिक क्षेत्र

क्र0 सं0	शैक्षणिक क्षेत्र	नशा मुक्ति मे सहायक आंकडे प्रतिशत मे
1.	रोजगार उन्मुख कार्यक्रम	78%
2.	पोषण विज्ञान एवं आरोग्य	72.6%
3.	धार्मिक विचारधारा/धर्मज्ञान	70.04%
4.	सामाजिक, पारिवारिक वातावरण	64.66%
5.	फिजियोथेरेपिस्ट	62%
6.	व्यक्तित्व विकास के आयाम	61.09%
7.	योग / ध्यान शिविर	59.6%

सन्दर्भ–

1. विकास मनोविज्ञान – एलिजाबेथ बी0 हरलोक वोल्यूम II, III 2. व्यक्तित्व का मनोविज्ञान एवं समाजशास्त्र–मेंकाकोलम डेविस वोल्यूम I,II,VI 3. काउंसलिंग एण्ड गाईडेंस–एस0 नारायणा राव 4. मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाएं –डॉ0 रॉय एण्ड वैरिस 5. शोध समाचार एवं विभिन्न पत्र पत्रिकाएं